'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 63 : हिंदी और रोजगार
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

रोजगारपरक हिंदी

प्रा. डॉ. वैशाली विठ्ठल खेडकर
सावित्रीबाई फुले महिला महाविद्यालय,
सातारा
भ्रमणध्वनि :- 9850337233
ई-मेल- vaishu.khedkar@gmail.com

वर्तमान समय में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण पूरी दुनिया तीव्र बदलावों का अनुभव कर रही है। इस बदलाव के संदर्भ में राष्ट्रभाषा हिंदी की भूमिका आवश्यक बन गयी है। विश्व क्षितिज पर हिंदी आज संपूर्ण आभा एवं प्रखरता के साथ दैदीप्यमान है। यूनेस्को ने १९९६ ई. में स्टीफेन वर्मा द्वारा संपादित विश्व की भाषाओं का एक एटलस प्रकाशित किया था। जिसमें उन्होंने विश्व की अनेक भाषाओं के उपर मंडराते अस्तित्व के संकट की बात कहीं थी। जिन भाषा बोलनेवालों की संख्या दिनों-दिन घटती जा रही है, वह भाषाएँ धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगी क्योंकि भाषा की संजीवनी और उर्जा उसकी व्यावहारिक उपयोगिता है। हिंदी के साथ आज अस्तित्व का कोई संकट नहीं है क्यांकि भारत में वह करोड़ो की मातृभाषा तथा विश्व में करोंड़ो की अनुराग भाषा है। वह आम आदमी के रोजी-रोटी एवं रोजगार की भाषा है।

वर्तमान युग वैश्वीकरण एवं बाजारवाद का युग है, जिसने विभिन्न देशों की सीमाओं को तोड़ा है। अतः मुक्त बाजार व्यवस्था एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण हिंदी में रोजगार की संख्या बढ़ गई है।

पत्रकारिता एवं रोजगार :-

अखबार जनतंत्र का रक्षक स्तंभ है। पत्रकारिता राष्ट्रीय मानवता का धर्म एवं जनमत जागृति का साधन है। अतः हिंदी पत्रकारिता में रोजगार के बहुत अवसर है। अखबारों की संख्या, उनकी प्रसार संख्या और पृष्ठ संख्या में बहुत बढ़ोत्तरी हुई हैं। अखबारों में सबसे अधिक संख्या हिंदी अखबारों की है। देश के सबसे अधिक प्रसार संख्यावाले पहले दस अखबारों में पाच अखबार हिंदी के हैं। इसी तरह कई पत्रिकाएँ भी है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर भी पत्रिकाएँ छपती है। कई अंग्रेजी पत्रिकाओं के हिंदी संस्करण भी आ रहे हैं। इनमें संवाददाता, अनुवादक, डी.टी.पी मुद्रित शोधन, कार्टून पत्रकारिता, विज्ञापन एवं खेल पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में अपरिमित रोजगार उपलब्ध है। इलेक्ट्रॉनिक मीड़िया, समाचार लेखन, कैमेरामन, कई प्रकार के परिसंवाद के रूप में भी भूमिका निभाई जा सकती है।

विज्ञापन एवं रोजगार :-

वर्तमान युग उद्योग-व्यवसाय एवं बाज़ार का युग है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतियोगिता पायी जाती है। व्यापार, औद्योगिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में सफलता का आधार विज्ञापन ही है। हर एक क्षेत्र विज्ञापन से प्रभावित है। वर्तमान ज्ञान, तंत्रज्ञान और जानकारी के इस युग में विज्ञापन की महत्ता निःसंदेह बढ़ गयी है। विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ता को अपनी ओर आकर्षित करना होता है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में आम जनता तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता होती है। यहाँ हर राज्य की अपनी अलग भाषा है। अतः पूरे देश में बोली जानेवाली और समझनेवाली भाषा हिंदी ही है। हिंदी भाषा की उपलब्धि यह है कि आज के बाज़ार में हिंदी विज्ञापन एक व्यावसायिक कार्य हुआ है।